DOI: 10.51220/hjssh.v9i1.12

Himalayan J. Soc.Sci. & Humanities Vol- 9 pp.73 - 75, December, 2014, ISSN. 0975 - 9891

भारतीय लोकतांत्रिक व्यवस्था की दशा एवं दिशाः वैदिक युग से वर्तमान तक

कुसुम डोबरियाल
संस्कृत विभाग
हे0न0ब0 गढ़वाल विश्वविद्यालय परिसर, पौड़ी गढ़वाल-246001 ,उत्तराखण्ड

Received: 18-12-2013 Revised: 10-04-2014 Accepted: 27-11-2014

ABSTRACT

प्रस्तुत शोधपत्र में भारतीय लोकतन्त्र प्रणाली के महत्व पर प्रकाश डालते हुए प्रजातान्त्रिक व्यवस्था में आई गिरावट के कतिपय कारणों का उल्लेख करते हुए सुदृढ़ लोकतन्त्र के निर्माण हेतु सुझाव प्रस्तुत किए गये हैं।

KEY WORDS-भारतीय लोकतन्त्र, महत्व, वैदिक एवं वर्तमान परिप्रेक्ष्य, सुझाव

भारत विश्व का एक विशाल महत्वपूर्ण लोकतान्त्रिक राष्ट्र है। वर्तमान युग प्रजातन्त्र का युग है। संसार के समस्त विकासशील देशों में प्रजातान्त्रिक शासन-व्यवस्था को सर्वश्रेष्ठ लोकप्रिय एवं सर्वकल्याणकारी समझा जाता रहा है। इस शासन-पद्धति की मुख्य विशेषता यह रही है कि यह लोगों के द्वारा, लोगों के लिए, लोगों की व्यवस्था है। इस व्यवस्था के अन्तर्गत जनता द्वारा चयनित संसद देश के लोगों की अपेक्षाओं व आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु पूर्णरूपेण उत्तरदायी होती है।

प्राचीन भारत में प्रजातन्त्र शासन प्रणाली का पर्याप्त विकास हुआ था। वैदिक काल की समिति, सभा (राज्य सभा तथा लोक सभा) से ज्ञात होता है कि जनसाधारण में पर्याप्त राजनीतिक जागृति हो चुकी थी[1]। लोगों ने अपने अधिकारों को भली भांति समझना तथा उसकी रक्षा करना सीख लिया था। प्रजातन्त्र के विकास के लिए ऐसे ही वातावरण की आवश्यकता होती है। इसी तरह धीरे-धीरे प्रजातन्त्र प्रणाली का जन्म हुआ। प्रजातन्त्र का स्पष्ट उल्लेख पाणिनी की अष्टाध्यायी, बौद्ध साहित्य, अर्थशास्त्र तथा महाभारत आदि में भी आता है और यूनानी इतिहासकारों ने भी इसका उल्लेख किया है। प्राचीन प्रजातन्त्र का पारिभाषिक नाम 'संघ था[2]। ये संघ दो प्रकार के होते थे-गण, जिसमें जनता के प्रतिनिधि सदस्य रहते थे तथा कुल, जिसमें वंश क्रमागत सदस्य हुआ करते थे। ईसा पूर्व चौथी शताब्दी के लगभग, यानी पाणिनी के समय में ये संघ विद्यमान थे तथा उन्हें महत्वपूर्ण समझा जाता था। कौटिल्य अर्थशास्त्र में भी कितने ही संघों का उल्लेख है जैस लिच्छिविक, कुरू पांचाल, काम्बोज आदि। प्राचीन लेखों व सिक्कों आदि से भी इनके अस्तित्व की पुष्टि होती है। ये संघ बहुत समय तक शक्तिशाली रहे तथा समाज का सांस्कृतिक विकास करते रहे। इनके कारण समाज में हर प्रकार की स्वतन्त्रता बनी रही थी। कृष्ण, महावीर, गौतम आदि के समान विभूतियाँ, प्रवर्तक और समाजसुधारक इसी वातावरण में उत्पन्न हुए थे। जैसे-जैस समय बीतता गया वैसे-वैसे साम्राज्यवाद का प्रभुत्व

©SHARAD

बढ़ने लगा। बिम्विसार, अजातशत्रु, समुद्रगुप्त, स्कन्दगुप्त आदि बलशाली राजाओं ने इन संघों का अन्त कर दिया। ईसा की पांचवी शताब्दी में संघ शासन भारत से विदा हो गया।

आधुनिक युगानुसार प्राचीन भारत में भी भिन्न-भिन्न प्रकार के शासन विधान विद्यमान थे। राजा द्वारा शासित राज्य से लेकर प्रजातन्त्र तक नाना प्रकार की शासन प्रणालियां विद्यमान थीं। ऐतरेय ब्राह्मण (8।13) मे आठ प्रकार के शासन-विधान उल्लिखित हैं (साम्राज्य, भोज्य, स्वराज्य, वैराज्य, महाराज्य, परमेष्ट्यराज्य, अधिप, व्ययम्)। विभिन्न पदवियों और उनके स्थान भी निर्देशित किये गये हैं। शासन-विधानों को दो विभागों में बांटा जा सकता है, जैसे-प्रजातन्त्र और राजतन्त्र। जैसे कि प्रजातान्त्रिक शासन विधान में जनसाधारण की सत्ता सर्वोपरि रहती थी वैसे ही राजतन्त्र शासन विधान में राजा ही सर्वोपरि रहता था तथा प्रजा को उसका आधिपत्य स्वीकार करना पड़ता था।

आधुनिक परिप्रेक्ष्य में हम देखते हैं कि जो लोकतान्त्रिक व्यवस्था प्राचीन काल में सुदृढ़ता को प्राप्त थी उसका उज्जवल भविष्य प्राचीन भारत के राजनैतिक विकास को दर्शाता है। आज क्या कारण है कि विश्व के विशालतम प्रजातान्त्रिक देश भारत, जिसने स्वतन्त्रता से आज तक की अपनी स्वतन्त्र राजनीतिक यात्रा में अपने लोकतान्त्रिक स्वरूप और मर्यादाओं से विश्व के अन्य गैर प्रजातान्त्रिक देशों को लोकतन्त्र अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया आज हमारा वही लोकतन्त्र असमंजस की स्थिति मे है? आज प्रजातन्त्र के रास्ते से भारतीय राजनीति में अपराधीकरण, गुटबंदियाँ, सत्ता लोलुपता, भ्रष्टाचार जैसी अनेक कुप्रवृतियां अपना स्थान बना रही है। जिससे लोकतन्त्र की आस्था कुंठित हो गयी है।

लोकतन्त्र मूलत: एक नैतिक व्यवस्था है। आज भारतीय जनता का लोकतन्त्र के आधार स्तम्भों-विधायिका एवं कार्यपालिका से विश्वास उठता जा रहा है, यह संवेदनशील प्रश्न है। वैदिक कालीन राजनीतिक व्यवस्था राजतन्त्र मे निहित लोकतन्त्र थी, यह कहना अतिशयोक्ति न होगी। ऐसी प्रणाली जो भारत में सदियों पूर्व प्रचलित थी आधुनिक काल के यूरोप के इतिहास के अध्ययन से इंग्लैण्ड मे देखने को मिलती है। वैदिक राजनीति के सिद्धान्त सत्य व तर्क की कसौटी पर कसे होने के कारण आज भी अपनी प्रमाणिकता सिद्ध करते हैं [3]।

वर्तमान प्रजातान्त्रिक व्यवस्था इतनी प्रदूषित हो चुकी है कि उससे लोक कल्याण हो पाना संभव नहीं दिखायी दे रहा है। सत्ता पाने के लिए सस्ती दरों पर खाद्यान्न की उपलब्धि, ऋण माफी आदि जैसे प्रलोभन दिये जाते हैं। चुनाव जीतने के लिए अपराधी तत्वों को सहारा, धन का लुटाया जाना इन माध्यमों से महत्वपूर्ण पदां को हासिल करना एकमात्र लक्ष्य बन गया है। आज लोकतान्त्रिक अव्यवस्था के कारण साम्प्रदायिकता-अलगाव विघटन और अनेकों घोटालों जैसे विषमतायें सामने उभरकर परिलक्षित हो रही है। अपराध, हिंसा, कमजोर वर्ग व महिलाओं का शोषण जैसी कार्यवाहियाँ एक लोककल्याणकारी राज्य एवं समतावादी समाज बनाने के लिए गहन चुनौती दे रही है। इसके अलावा प्रजातान्त्रिक शासन-व्यवस्था मे निर्वाचन प्रणाली धन, बल के कारण दिनोदिन महंगी से मंहगी होती जा रही है। यह एक विचारणीय प्रश्न है। योग्य एवं स्वच्छ छवि के लोग राजनीति में इसलिये नहीं आना चाहते कि उनके पास वर्तमान निर्वाचन प्रणाली में भाग लेने हेतु धन बल नही है।

भारतीय प्रजातन्त्र को मूल्य विहीन करने में राजनीतिक अपराधीकरण, भ्रष्टाचार, शैक्षिक योग्यता विहीन प्रत्याशियों का चुनाव आदि प्रमुख कारण हैं। आज राजनीति में राज मुख्य व नीति गौण ऐसी स्थिति देखने को मिलती है। आवश्यकता इस बात की है कि लोकतन्त्र के उज्जवल भविष्य के लिए निम्न सुझाव

उपयोगी सिद्ध हों यह मेरा आशावादी दृष्टिकोण है।

सुझाव प्रस्तुत हैं

1. राजनीति को स्वच्छ बनाया जाय।
2. भ्रष्टाचार और अपराधियों से राजनीति को अलग रखा जाय।
3. निर्वाचन प्रणाली में संशोधन करते हुए ऐसी व्यवस्था की जाय जिससे चुनावी व्यय सरकार द्वारा वहन किया जाय तथा प्रत्याशी को किसी भी व्यक्ति अथवा संस्था से धन लेने की अनुमति न हो इससे राजनीतिक भ्रष्टाचार में कमी आयेगी।
4. जनता को शिक्षित बनाया जाय व राजनीतिक शिक्षा देकर उन्हें योग्य प्रतिनिधियों का चुनाव करने में सहयोग प्रदान किया जाय साथ ही चुनाव प्रणाली में ऐसी व्यवस्था हो जिसमें आवश्यकता पड़ने पर जनता द्वारा प्रतिनिधि को वापस बुलाने का विधान हो।
5. प्रत्याशियों के लिए शैक्षिक अर्हता निर्धारित की जाय जिससे सक्षम व योग्य प्रत्याशी सत्ता तक पहुंच सके।
6. राजनैतिक जागरूकता प्रत्येक जन तक पहुंचे।

यह सभी सुझाव सुदृढ़ लोकतन्त्र के निर्माण में तथा प्रजातान्त्रिक मूल्यों की रक्षा करने में कारगर सिद्ध हो सकते हैं।

आभार

शोधकर्ती आदरणीय गुरूवर प्रो0 जे0के0 गोदियाल के प्रति अपना आभार प्रकट करती है, जिनसे निरन्तर शोध कार्य करने की प्रेरणा मिलती है।

सन्दर्भ शोध ग्रन्थ

1. हरिदत्त शास्त्री एवं कृष्ण कुमार (1977): ऋक्-सूक्त संग्रह, साहित्य भण्डार, मेरठ, पृ0 278
2. शिवदत्त ज्ञानी (1944): भारतीय संस्कृति, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली। पृ0 312
3. राजेश जैन (2004): भारतीय राजनीति के नये आयाम, कालेज बुक डिपो नई दिल्ली। पृ0 240